Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 4, March-2019, ISSN 2230-7540

स्वतंत्रता मे राष्ट्रीय आन्दोलनो का समीक्षात्क अध्ययन

Dr. Mamta Devi*

Assistant Professor, Department of Political Science, Maa Omwati College of Education, Haryana

***सार** - आज हम जिस भारत में रह रहें हैं। यह भारत एक प्रभुसत्ता सम्पन्न भारत है जो आन्तरिक व बाहय रूप से स्वतन्त्र भारत है। यह स्वतंत्र प्रभुसत्ता भारत को 15 अगस्त 1947 को प्राप्त हुई थी। लेकिन यह प्रभुसत्ता भारत को उतनी सरलता से प्राप्त नही हुई थी। जितनी को आज हम समझते है। इस प्रभुसत्ता के लिए भारतीयों के द्वारा अनेक आन्दोलन चलाए गए तथा अनेक देश-भक्त भारतीयों ने अपने प्राणों को न्यौछावर कर दिया, तब जाकर भारत को प्रभुसत्ता सम्पन्नता प्राप्त हुई तब जाकर हम एक स्वतंत्र भारत के नागरिक बने। लेकिन आज के वातावरण को देखकर लगता है। कि आज भारत के नागारिक उन देश भक्तो के कार्य को भूल गए जिनके संघर्षों से हमे आजादी मिली।*

आज आवश्कता इस बात की है। कि हम राष्ट्रीय आन्दोलनों के साथ-साथ अपने देश-भक्तों के संघर्षो को याद करे और जिस देश के लिए उन्होनें अपने प्राण न्यौछावर कर दिए उस देश को हम एक विकसित देश बनाएं यह हमारा नेतिक और राष्ट्रीय उत्तरदायित्व है।

----------X----------

राष्ट्रीय आन्दोलनों का योगदान

प्राचीन समय में ही भारत देश को उसकी सम्पन्नता के कारण सोने की चिडियाँ कहा जाता था अर्थात् भारत देश प्राकृतिक संसधानो से सम्पन्न था यहि कारण था कि समय- समय पर यहाँ विदेशियों का आगमन होता रहा है। समय समय पर अनेक विदेशियों नें (शक, आर्य, पुर्तगाली, डच) आदि विदेशी जातियों का यहाँ आगमन हुआ परन्तु ये जातियाँ भारत मे स्थायी रूप से नही बसी 16वी सदीं में भारत में युरोपीय जातियों जैसे अंग्रेज व फ्रांसीयो का आगमन हुआ, यूरोपीय जातियाँ भारत में एक उपनिवेश के रूप में आई थी और लगभग दो सौ वर्षो तक भारत को गुलामी की जंजीरों में जकडा रहा।

यूरोपीय अंग्रेजो ने व्यापारिक कम्पनी के रूप में भारत में प्रवेश किया। 31 दिसम्वर 1600 ई0 को ब्रिटिश महारानी ऐलीजा वेथ अंग्रेज व्यापारियों की इस कंपनी को भारत के साथ व्यापार करने का अधिकार पत्र प्रदान किया। ईस्ट इण्ड़िया कम्पनी ने बहुत तेजी के साथ प्रगति की थीं। क्योकि उस समय मुगल सम्ारट औंरगजेब की मृत्यु सन् 1707 में हो गई थी परवर्ती मुगल सम्राटों की दुर्बलताओं के कारण दक्षिण में निजाम मैसुर में हैदर अली तथा बंगाल, बिहार, उडीसा, रूहेलखण्ड, केरल व भरतपुर स्वतंत्र हो गये थे उधर राजस्थान में राजपुतो की स्वतंत्रता की लालसा ने भारत को आंतरिक रूप से दुर्बल बना दिया अग्रेजों ने भारत के इन्हीं कमजोरियों का लाभ उठाते हुए कर्नाटक व प्लासी के युद्धो को जीतने के साथ-साथ भारत में स्थिर रूप से अपने पैर जमा लिये तथा भारतीय प्रशासन की बागडोर अपने हाथो में ले ली।

सन 1750 ई0 में कम्पनी ने भारत में शक्ति राजनीति का खेल प्रारम्भ किया एवं 1850 ई0 तक भारत शक्ति राजनीति का खेल प्रारम्भ किया एवं 1850 ई0 तक भारत के विशाल भाग में शासन स्थापित कर लिया।

जैसे-जैसे अंग्रेजों की शक्ति बढती गई उनकी लालसा भी उतनी ही बढती गई और अब उनकी कम्पनी का लक्ष्य अधिक से अधिक आर्थिक लाभ प्राप्त करना साम्राज्य का विस्तार करना रह गया था।

प्लासी का छलपूर्ण युद्ध जीतने के पश्चात लार्डक्लाइव ने लिखा था

मुझे पूरा विश्वास हो गया है। कि प्लासी के युद्ध के बाद अंग्रेजों के हथियारों के भय और उनके प्रभाव के द्वारा मैं सम्पूर्ण देश को कम्पनी के लिये आत्मसात कर लेता जिस सरलता से वर्तमान सूबा मीरजाफर अभी कर रहा है।

www.ignited.in

18वी शताब्दी के भारत का यदि हम अवलोकन करें तो सत्ता ने द्वढता से अपने पैर जमा लिये थे! यह काल भारत में राजनैतिक दुर्बलता और नैतिक पतन का काल था। मुगल कालीन वैभव नष्ट हो चुका था। जनसंख्या घटने लगी थी वाण्जिय एवं व्यापार का विकास अवरूद होने लगा था धीरे- धीरे सभी प्रकार के व्यापारो पर अंग्रेजों का आधिपत्य होता चला जा रहा था चारों ओर अव्यवस्था और अराजकता का बोलवाला था सामाजिक प्रथाओ और रूढ़ियो में अब और भी अधिक विकृति आ गई थी धर्म तथा कला के क्षेत्र में असृजनात्मक प्रवृतियाँ घर कर गई थी

''जब 18वीं शदी के मध्य में अंग्रेजी सत्ता ने अपने पैर जमा लिये थे तब भारत राजनैतिक निर्बलता और पतन का निम्नस्तर पर था भारतीय सम्भता एवं ससंकृति लगभग पतन के गर्त मे पंहुच चुकी थी। 18वीं शताब्दी के मध्य से लगभग सौ वर्ष तक वह पतन के अत्यन्त ही निम्न स्तर पर हो गई थी उस अंधकारमय युग में किसी भी भारतीय भाषा में किसी भी सर्वक्षेष्ठ महत्वशाली कृति की रचना नही हुई थी धर्म में भी कोई विकास नही हुआ था और संरक्षण के अभाव में लगभग समस्त ललित कलायें प्राणहीन हो विलुप्त हो गई थी!

भारतीय जनता अधंविश्वास के अंधकार मे डूबी हुई थी, जातिबाद और छुआछूत् का बोलवाला था परन्तु अंगेजी साम्रज्य की स्थापना ने जो नवीन शिक्षा और विचारधारा को भारत में प्रसारित किया उसके परिणाम स्वरूप देश में एक नवीन चेतना का विकास हुआ

वारेन हेस्टिगंज से लेकर लार्ड विलियम वेटिंग के काल तक लगभग प्राचीन व्यवस्था का अन्त हो चुका था।

पाश्चात्य शिक्षा ने भारतवासियों के द्वष्टिकोण में परिवर्तन कर दिया था भारतीय पाश्चात्य विचार -धारा से अत्याधिक प्रभावित थे और अपने देश की सामाजिक तथा राजनैतिक दशा का मुल्यांकन भावनाओं के स्थान पर तर्क और बुद्धि से अधिक करते थे इस काल में भारत मध्ययुग से मुक्त होकर आधुनिक युग में प्रवेश कर रहा था।

19वीं सदी व आन्दोलनों का आरम्भ

19वी सदी भारतीय नवजागरण की सदी थी। परन्तु इस युग मे राष्ट्रीय जागृति भी हुई नव जागृति का उद्भव किसी एक निश्चित तिथि का परिणाम नहीं था। इसके उद्भव और विकास मे आर्थिक, राजनैतिक, धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं शैक्षणिक तत्वो का विशेष योगदान रहा है। इसके कई कारण थे क्योंकि जब मध्यप्रांत का गठन हआ उस समय प्रांत में न तो कोई रेलमार्ग था और न ही कोई पक्की सडक थी परन्तु जब यह बम्बई से रेलमार्ग द्वारा जुड गया तो आवागमन के साधनो ने मध्य प्रांतो मे राजनैतिक चेतना के विकास मे महत्वपूर्ण योगदान दिया।

व्यापारी के रुप मे भारत आने वाली ये फिरंगी भारत के भाग्य विधाता बन गये भारतियों को पराधीनता के इस बंधन से मुक्त होने के लिये काफी संघर्ष करना पडा अर्थात् यही से भारत में संघर्ष के आन्दोलनो की शुरूवात हुई।

19 वी शताब्दी मे श्री सुरेन्द्रनाथ बैनर्जी द्वारा 1876 में "इडिण्न एसोशियेसन की स्थापना हुई लार्ड रिपन के वायमरायत्व काल में (1880-84)'' स्थानीय स्यायत्व शासन का प्रारम्भ किया गया। 1875 में इडियन लीग (कलकता) की तथा 1884 मे महाजन सभा (मद्रास) 1885 में प्रेसीडिंसी एसोसियशन-(बम्बई) में विभिन्न संगठनों की स्थापना हुऐ

भारत में 1857 के विद्रोह को राष्ट्रीय आंदोलन की शुरूआत माना जाता है देश में राष्ट्रीय आन्दोलन की शुरूआत केवल किसी एक घटना का परिणाम नही थी। बल्कि राष्ट्रीय आन्दोलन एक ऐसे राष्ट्रवाद व पुनजागरण का परिणाम था जिसको जन्म देने व विकसित करने में अनेक तत्वों व घटनाओं ने योगदान दिया। राष्ट्रीय आन्दोलन को समझने के लिए आवश्यक है कि उन तत्वों और घटनाओं को जानना आवश्यक है। जिन्होने राष्ट्रीय आन्दोलन को जन्म दिया।

1) ब्रह्म-समाज - 19 वीं शताब्दी के प्रमुख समाज सुधारक राजा राममोहन राय 1828 में ब्रह्म-समाज की स्थापन के द्वारा राष्ट्रीय आन्दोलनों की शुरूआत की जिसका उद्देश्य हिन्दू समाज में व्याप्त कुरीतियों जैसें ऊँच-नीच, छुआछूत जातिप्रथा, अंध-विश्वास, बाल-विवाह तथा सती-प्रथा को दूर करते हुए शिक्षा के प्रसार से लोगों में एक वैज्ञानिक सोच का निर्माण करना था।

2) आर्य समाज - आर्य समाज की स्थापना सन् 1875 में स्वामी दयानन्द ने की। स्वामी जी एक ईश्वर में विश्वास करते थे तथा मूर्ति पूजा के विरुद्ध थे आर्य समाज एक राष्ट्रवादी और देश भक्ति का आंदोलन था। वह इस बात में विश्वास करता था। कि वेद पूर्ण हैं। और वैदिक संस्कृति सर्वश्रेष्ठ है उन्होनें भारतियों को हिन्दी, हिन्दू और हिन्दुस्तान का नारा दिया।

www.ignited.in

3) रामकृष्ण मिशन - भारतीयों को जाग्रत करने में रामकृष्ण परमहंस उनके शिष्य स्वामी विवेकानन्द तथा उनके द्वारा स्थापित किये गए राकृष्ण मिशन ने महत्वपूर्ण कार्य किये!

4) थियोसोफिकल सोसायटी - थियोसोफिकल सोसायटी एक अन्तराष्ट्रीय संस्था थी जिसने भारतीय संस्कृति और सभ्यता की ओर ध्यान आर्कषित किया भारत में डॉ. ऐनी बेसन्ट इसकी प्रमुख कार्यकर्ता थी जिन्होनें ''होम रुल आंदोलन'' के रुप में राजनीतिक आन्दोलन का नेतृत्व भी किया।

5) मुस्लिम सुधार आन्दोलन - ब्रहावी आन्दोलन के संस्थापक मुहम्मद अब्दुल वहाब थे, इसका उद्देश्य मुस्लिम समाज में फैली हुई कुरुतियों व अशिक्षा को दूर करने का प्रयास किया गया।

6) अलीगढ़ आन्दोलन - इसके नेतृत्व कर्ता सैयद अहमद थे जो एक प्रसिद्ध राष्ट्रवादी थें, जिन्होनें हिन्दू व मुसलमानों को एक राष्ट्रीय सूत्र में बाँधने का कार्य किया।

7) अहमदिया आन्दोलन - इस आन्दोलन का प्रारम्भ मिर्जा-गुलाम अहमद ने किया था, जिसिका उद्देश्य देश की एकता को बनाए रखना था।

महात्माँ गाँधी का राष्ट्रीय आन्दोलन में योगदान 1919-1947

महात्माँ गाँधी जी को देश की आजादी में एक महत्वपूर्ण संघर्षशील व्यक्ति के रुप देखा जाता है। जिन्होनें अपने पूरे जीवन को देश की आजादी में लगा दिया, और अपने संघर्षो एवं प्रयासों से देश को आजाद कराया! उनके द्वारा चलाए गए मुख्य आन्दोलन इस प्रकार हैं।

1) असहयोग आन्देलन 1920 - रौलेट एक्ट जलियाँवाला हत्याकाण्ड तथा भारतीय मुसलमानों द्वारा अंग्रेजोंके विरुद्ध चलाए जा रहे खिलाफत आन्दोलन को देखते हुए गाँधी जी ने ब्रिटिश सरकार के विरूद्ध असहयोग चलाने का प्रस्ताव 1920 में नागपुर में हुए क्रांग्रेस अधिवेशन में पास करवा लिया। इस आन्दोलन के द्वारा सरकारी सेवाओं का बहिष्कार किया गया।

2) सारमन कमीशन - सारमन कमीशन को 1927 में नियुक्त किया गया था। इस आयोग के कुल 7 सदस्य थे, और सर साइमन इसका अध्यक्ष था। इसके सभी सदस्य अंग्रेज थे इसलिए इसका विरोद्ध किया गया और सारमन कमीशन वापिस जाओं के नारे लगाए गए जिसका नेतृत्व "लाला लाजपत राय ने किया था, अंग्रेज पुलिस अधिकारियों ने उन पर लाठियों से प्रहार किया जिसके कारण कुछ ही दिनों में उनकी मृत्यु हो गई। लाला जी ने कहा था'' "मेरे शरीर पर पडी एक-एक लाठी ब्रिटिश साम्राज्य के कफन में कील का काम करेगी" और यहीं से भारत में क्रान्तिकारियों गतिविधियों का आरम्भ होता हैं। क्रान्तिकारियों ने सैडर्स की गोली मारकर हत्या कर दी थी जिन्होनें लाला जी पर लाठियों का प्रहार का आदेश दिया था।

3) सविनय अवज्ञा आन्दोलन - सन् 1929 में लाहौर में हुए क्रांग्रेस अधिवेशन में पास किए गए प्रस्ताव के अनुसार गाँधी जी ने सविनय अवज्ञा आन्दोलन चलाने का निर्णय किया, और 12 मार्च, 1930 को गाँधी जी अपने 79 सत्याग्रहियों के साथ साबरमती आश्रम से समुद्र तट की ओर चल पड़ें इस आन्दोलन के कार्यक्रम के अनुसार स्थान-स्थान पर नमक कानून तोडा गया, विदेशी कपडे की होली जलाई गई तथा स्त्रियों द्वारा विदेशी शराब बेचने वाली दुकानों के बाहर धरने दिए गए। सरकार ने कठोर दमन की नीति को अपनाते हुए 16 अप्रैल को जवाहरलाल नेहरु और कुछ दिनों के पश्चात् गाँधी को गिरफ्तार कर लिया।

4) क्रिप्स योजना (1942) सन् 1941 में जापान के इग्लैण्ड के विरुद्ध युद्ध में शामिल हो जाने से इग्लैण्ड की स्थिति बहुत खराब हो गई, ऐसी स्थिति में अंग्रेजी सरकार ने यह अनुभव किया कि भारतीयों के सहयोग के बिना जापान का मुकाबला करना असम्भव है। इसलिए उन्होनें भारतीय समस्या को सुलझाने के लिए सरस्टेफोर्ड क्रिप्स को भारत भेजा।

5) भारत छोड़ों आन्दोलन 1942 - 14 जुलाई 1942 को क्रांग्रेस की कार्यकारिणी समिति की बैठक बुलाई गई और एक प्रस्ताव पास किया गया जो "भारत छोडों प्रस्ताव'' के नाम से प्रसिद्ध हैं। इस प्रस्ताव में गाँधी जी के विचारों का समर्थन किया गया। इस प्रस्ताव को अखिल भारतीय क्रांग्रेस ने 7 तथा 8

www.ignited.in

अगस्त को अपने बम्बई अधिवेशन में कुछ सुझावों के साथ पास कर दिया गया।

6) शिमला कांफ्रेंस तथा वेबल योजना - सन् 1943 में लार्ड वेबल को भारत का वायसराय नियुक्त किया गया। 14 जून, 1945 को रेडियों पर भाषण देते हुए उन्होनें भारतीय समस्या का समाधान करने के लिए एक योजना प्रसारित की, जिसे वेबल योजना का नाम दिया गया इसमें उन्होनें कहा कि युद्ध के समाप्त होने के पश्चात भारतीयों को स्चयं अपना संविधान बनाने का अधिकार दिया जाएगा इस योजना पर विचार करने के लिए विभिन्न राजनीति दलों का एक सम्मेलन शिमला में बुलाया गया, परन्तु जिन्नाह की हठधर्मी के कारण यह सम्मेलन असफल हो गया।

7) मंत्रीमण्डल मिशन योजना 1946 - मंत्रीमण्डल मिशन 24 मार्च, 1946 को दिल्ली पहुँचा और इसके सदस्यों ने शीघ्र ही भारत के प्रमुख नेताओं से वातचीत करनी आरम्भ कर दी। नेताओं से बातचीत करने के पश्चात आयोग ने भारतीय समस्या का हल करने के लिए एक योजना पेश की। जिसे मंत्रीमण्डल मिशन योजना कहा जाता हैं। अतः इस योजना में यह कहा गया कि भारत का नया संविधान बनाने के लिए भारतीयों द्वारा निर्वाचित एक संविधान सभा की स्थापना की जाएगी।

8) माँऊटबेटन योजन - भारत की समस्या को हल करने के लिए नए गर्वनर जनरल लार्ड माऊँटबेटन ने 3 जून 1947 को अपनी एक योजना तैयार की, ओर इस योजना के द्वारा भारत का विभाजन कर भारत और पाकिस्तान नामक दो देशों की स्थापना की, अतः इस प्रकार 15 अगस्त 1947 को भारत को स्वतन्त्रता प्राप्त हुई थी।

इस प्रकार हम कह सकते है कि भारत को जो आजादी मिली वो आसान या मुफ्त में नहीं मिलीं इसके लिए कितने भारतीय देशभक्तों ने अपने जीवन को संघर्षो में बदलकर, अपने प्राणों का वलिदान दे दिया, तब जाकर हम एक प्रभुत्तासम्पन देश के नागरिक बनें।

निष्कर्ष

आज भारत के सामाजिक और राजनीतिक वातावरण का जो दृश्य हमारे सामने हैं, उसे देखकर हमें लगता है, कि हम आजादी के मूल्यों और संघर्षो को भूल गए है। आज हमें भारत में चारों तरफ भ्रष्टाचार, अपराधीकरण, स्वार्थनीति, भाई-भतीजेवाद, और एक ऐसा भारत देखने को मिलता है, जो जाति, क्षेत्र, भाषा, धर्म, तथा स्वार्थो के आधार पर बँटा हुंआ है। अगर ऐसा ही रहा तो हमारे पूर्वजों ने अपने प्राणों को न्यौछावर करके जो एक, विकसित, शक्ति सम्पन्न, बन्धुतत्व और विभन्नताओं में एकता वाले भारत का सपना देखा वो सपना ही रह जाऐगा।

अतः मुझे लगता है, कि आज हमारी जिम्मेदारी बनती है, कि हम अपने पूर्वजों की इस धरोहर की इस प्रकार से रक्षा करें कि यह पूरी दुनियाँ के लिए एक मिशाल बन जाए।

संदर्भ ग्रन्थ सूची:-

1) पलीटः भारतीय अभिलेख संग्रह प्र. 38

2) भारतीय सरकार एवं राजनीति – डॉ. गुलशन राय हनसी गेट भिवानी

3) भारतीय संविधान एवं राजनीति - सोमनाथ 295 Lbrahim Mandi Karnal Haryana

4) स्वतंत्र भारत में राजनीति- राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद नई दिल्ली

5) आक्र्यालाजिकल सर्व ऑफ इंडिया- 1624-25 पृष्ट 168

6) ग्वालियर पु.रि.सं. 1671 क्रंमाक 111

Corresponding Author

Dr. Mamta Devi*

Assistant Professor, Department of Political Science, Maa Omwati College of Education, Haryana

mamtadevi727@gmail.com

www.ignited.in